Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

हरियाणवी भजनीक साहित्य

Dr. Upasana Jindal*

P.Hd. (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.

सार – *अधिकांश विद्वानों ने साहित्य के तीन भेद किये हैं-लोक साहित्य, जनसाहित्य व शिष्ट साहित्य। विद्वानों ने लोकसाहित्य व जनसाहित्य को एक दूसरे का पर्याय माना है, जबकि दोनों में सूक्ष्म अंतर है। लोकसाहित्य समस्त लोक द्वारा, समस्त लोक के लिए होता है। उसमें किसी रचनाकार का नामोल्लेख नहीं होता। लोक साहित्य जहाँ लोक के लिए लोक के ही द्वारा रचित साहित्य है, वहाँ जनसाहित्य लोक के लिए लोक में से ही व्यक्ति विशिष्ट द्वारा रचित साहित्य है। लोकसाहित्य में रचयिता अनुपस्थित है जबकि जनसाहित्य में रचयिता रचना में उपस्थित है।*1 *लोक साहित्य में लोक मनोभावों का तीव्र वेग है, जिस पर कोई नियम लागू नहीं होता। जनसाहित्य में लोक मनोभावों की अभिव्यक्ति की लोक मांग है, जिसकी अपनी अवधारणाएँ एवं नियमावली है, शिष्ट साहित्य शास्त्रीय मापदंड पर खरा उतरने वाला विद्वता का प्रदर्शन है। इस प्रकार साहित्य के इन तीनों रूपों की अलग-अलग विशेषताएँ हैं। जनकवि लोक से ही होता है और उसकी रचना के भाव तथा भाषा लोक से ही होते हैं। उसकी अभिव्यक्ति को लोकसाहित्य में इसलिए नहीं रखा जा सकता क्योंकि वह लोक साहित्य की परिभाषा से बाहर है।*

----------X----------

जनसाहित्य को परिभाषित करते हुए मथाना व डॉ. बाबूराम लिखते हैं- "जनसाहित्य शिष्ट व्यक्ति द्वारा रचा हुआ वह साहित्य है, जो सह-संवेदना के फलस्वरूप सामान्य जन के लिए अभिव्यक्त होता है।2 वे आगे लिखते हैं कि जनसाहित्य उन रचनाओं के लिए प्रयोग किया जाता है जो किसी व्यक्ति विशेष की रचनाएँ हैं अर्थात् लोक रचनाकार द्वारा रचित साहित्य जनसाहित्य है।3 हरियाणवी जनसाहित्य के अध्ययन को सुगम बनाने हेतु इसका निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजन किया जा सकता है- (1.) आल्हा युग (2.) भजनीक युग (3.) सांग युग

जनसाहित्य के अन्तर्गत मैंने भजनीक साहित्य को ही लिया है। भजनीक साहित्य के अंतर्गत मैंने ज्ञात, अज्ञात व अल्पज्ञात जन कवियों की प्रस्तुति की है। 'हिन्दी साहित्य कोश' (भाग-एक) के अनुसार, "जिस कवि के काव्य का संपर्क जनता के व्यापक जीवन से हो, वही कवि जनकवि कहलाने का अधिकारी है।"4 भजनीक साहित्य के प्रस्तोता जनकवियों का परिचय निम्नांकित है-

पंडित ताराचंद 'वैदिकतोप':

पं. ताराचंद 'वैदिक' अहीरवाल के सुप्रसिद्ध लोकगायक हैं। उनका जन्म महेन्द्रगढ़ जिले के कोथल खुर्द नामक गाँव में आषाढ़ शुक्ल एकादशी संवत् 1935 को हुआ। उन्होंने अपने गाँव 'कोथल' को 'कविस्थल' कहा है। अपना परिचय देते हुए स्वयं कवि कहता है-

पूर्वी पंजाब प्रांत जिला महेन्द्रगढ़

पत्रालय खास बात कविस्थल सुग्राम है।

ब्राह्मण कुल उत्पन्न मुखिया घराने में

कवि 'ताराचंद' 'वैदिकतोप' उपनाम है।5

पं. ताराचंद का विवाह अठारह वर्ष की आयु में नारनौल के निकटवर्ती गाँव 'बिगोपुर' की श्रीमती गिंदोड़ी देवी के साथ हुआ। इनके कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई। कुछ वर्षों बाद इन्होंने छोटी बहन पवित्रा देवी के पुत्र सत्यदेव को गोद ले लिया। पं. ताराचंद बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने अध्यापक व लोकगायक के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त की है। 'आर्य भजनोपदेशक' के रूप में आर्य समाज में उनका विशेष स्थान है। उन्होंने सन् 1957 में आर्य समाज के नेतृत्व में हिन्दी के लिए सत्याग्रह किया। इसी आंदोलन के कारण वे तीन महीने तक नारनौल की न्यायिक हवालात में बंद रहे। सन् 1967 में गोरक्षा आंदोलन के दौरान आप सत्याग्रही के रूप में दो बार जत्था लेकर गए और दोनों बार एक-एक महीने की सजा काटी।

www.ignited.in

पं. ताराचंद मूलतः भजनोपदेशक एवं लोकगायक हैं। उनके भजनों और गीतों की लगभग 20 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। यथा-आर्यगीत बतीसी, सुंदर भजनावली, सुंदर गीतांजलि, ताराचंद की झलक, वैदिक सिद्धान्त, सत्य की विजय, वैदिक दुन्दुभि, हमारी सभ्यता, भजन आर्य ज्योति, चेतावनी, आगे बढ़ो, ताराचंद भजनावली, भजन वीरगाथा, बात की बात, वैदिक भजनावली, तूफान लहर, स्त्री गीत संग्रह, ताराचंद की तराजू, आर्य ज्योति आदि।

पं. ताराचंद मूलतः समाज सुधार हैं। उनके गीतों व भजनों की प्रत्येक पंक्ति में समाज-सुधार का स्वर गूंजता दिखाई देता है। नमूने के रूप में एक गीत द्रष्टव्य है-

"एक ईश्वर को तज करके यहाँ देवता तेतीस करोड़ पूजे।

देवी भुइयाँ सेढ़ शीतला देखे ठौर ही ठौर पूंजै।।

नंग धड़ंग बाबाजी मसटंडे तखततोड़ पुजै।

अंधे माता-पिता आदि से लड़ते और फिसाद करै।।

मर जाने के बाद देखते धन कितना बरबाद करैं।

तेरहवी वरणी बरसोधी कनागतों में श्राद्ध करैं।

अछूत बतावै मनुष्यों को धूत्र्त बने बकवाद करै।

जात-पात और छुआछूत की हुई नादानी वेद बिना।।"6

भावानुकूलता, चित्रमयता, ध्वन्यात्मकता, सपाटबयानी, प्रश्नात्मकता, सूक्तिमयता, प्रवाहमयता, अलंकारिता आदि उनके गीतों (भजनों) की अनेक विशेषताएँ हैं।

पं. बस्तीराम:

हरियाणा के आर्य भजनोपदेशकों में पं. बस्तीराम का विशेष स्थान है। उनका जन्म हरियाणा की झज्जर तहसील (वर्तमान जिला) के ग्राम खेड़ी सुलतान में आसोज बदी चतुर्थी को संवत् 1898 में हुआ। इनके पिता श्री पं. रामलाल प्रसिद्ध कर्मकांडी थे। छः वर्ष की अवस्था में इन्हें निकटवर्ती गांव माछरौली के पं. हरसुखजी के यहाँ हिन्दी-संस्कृत पढ़ने के लिए भेजा गया। अपने अध्ययन के दौरान इन्होंने होड़ा चक्र, विष्णु सहस्र नाम, लघु सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्ंरथ कंठस्थ किये। वे भजन, कीर्तन, रुक्मणी मंगल आदि बड़े भावपूर्ण ढंग से गाते थे। वे इकतारे पर गाते थे। छंदोद्धरण व चुटकले उनके प्रचार कार्य में मिठास भर देते थे। उनकी काव्य-रचनाओं में दोहा, लावणी, चैपाई, ख्याल आदि छंदों का मेल होता था। उनकी रचनाओं में हरियाणवी, अहीरवाटी एवं ब्रजभाषा का सुंदर मेल दिखाई देता है। उनके भजनों में दुर्गा, माता मसानी, तंत्र-मंत्र, गंडा-डोरी, ताबीज, कबरों की पूजा, अनमेल विवाह, पाषाण पूजा, बलि कर्म, मृतक, श्राद्ध आदि का खण्डन मिलता है। उनके भजनों में चार वेद, छः शास्त्र, गुरुकुल शिक्षा, यज्ञ, हवन, विधवा विवाह, समाज सुधार, शिक्षा प्रसाद आदि का पुरजोर समर्थन मिलता है। उनकी मृत्यु सन् 1958 में हुई। उनके भजन दो भागों में छपे हैं। उनके भजनों का एक नमूना द्रष्टव्य है-

मत डरो खायेगी कैसे देवी पत्थर की ।। टेक।।

हँसै ना बोले ना चाले, मुँह एक भी न बोल निकाले।

कैसे दुःख है कैसे टाले, मुख तुम्हें नाक कान जो देखे।

यह कारीगरी हे कारीगर की। ।।मत।।

कई बार मंदिर में चोर पधारे, नये नये वस्त्र सभी उतारे।

जेवर छत्र उतार लिये सारे,

कई बार हमने आजमाई नंदी कर दी नहीं सरकी ।।2।

कुत्ता देखा एक बड़ा भवन में, चाटे खूब डरे नहीं मन में,

चलता सीलक कर गया तन में,

करामात कहो वहाँ रही बाकी नहिं ताहवें ना दे घुड़की ।।3।।

जड़-चेतन का भेद बखाना, चेतन वह जिन दुख-सुख माना,

जड़ें वह जिसमें जीवन-प्राण,

बस्तीराम तज सन पाखंड है का भक्ति परमेश्वर की ।।4।।7

महाशय बुद्धिधर यादव:

महाशय बुद्धिधर यादव का जन्म सन् 1895 में रेवाड़ी जिले के 'लुहाना' नामक ग्राम में हुआ था। उनके समय में समाज में अंधविश्वास, अविद्या, अनमेल विवाह, मूर्ति पूजा, भैरो-भैया की पूजा, माता मसानी आदि का बोलबाला था। उनके भजनोपदेश सम्बन्धी 4 पुस्तके 'भक्ति प्रैस', 'भगवदभक्ति', रेवाड़ी से छपीं थीं। उनके अधिकांश गीत बेमेल विवाह, पाखण्ड खंडन सम्बन्धी हैं। उनके गीतों में सुधार की प्रभावशाली ललकार है। उनके गीत लम्बे हैं, लेकिन अत्यन्त प्रभावशाली हैं। उनके भजनों का एक नमूना द्रष्टव्य है-

www.ignited.in

बेबे सीखो तम धर्म प्रचार ।।टेक।।

बिन धर्म नहीं होगी नय्या पार।

ये तो दुनिया है भव-सागर की धार।

इसमें डर है अजब अपार।

कच्छ मच्छ बने दुःख देने हार।।

काम-क्रोध का सै लोभ अपार।

चारों तरफ को यह रहे संहार।।

छली हँसली उनकी आवे चक्करदार।8

स्वामी केवलानन्द:

स्वामी केवलानंद का जन्म सन् 1871 में रेवाड़ी जिले के कारोली नामक ग्राम में हुआ। उन्होंने बचपन में गाये चराईं और जवानी में हल भी चलाया। इन्हीं दिनों उन्होंने हिन्दी का ज्ञान भी प्राप्त किया। इन्होंने सन् 1925 में संन्यास धारण किया तभी वे केवलानंद नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके भजन मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, विधवा विवाह, गौभक्ति, दहेज प्रथा से परिपूर्ण होते थे। वे अपने क्षेत्र के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपनी पुत्री का विवाह संस्कार वैदिक रीति पद्धति से कराया। स्वामी केवलानंद अकेले ही प्रचार के लिए निकलते थे। उनके हाथ में इकतारा और खुड़ताल होती थी। वे गऊ रक्षा के सम्बन्ध में प्रचार ही नहीं करते थे, अपितु कसाइयों को गाय व बछड़े बेचने पर प्रतिबंध भी लगा दिया था।

स्वामी केवलानंद के समय में दहेज का बोलबाला था। एक परिवार कन्या के हाथ पीले करने के लिए अपना घर-बार बेचना चाहते हैं। यह बात सुनकर उनकी बिटिया स्नेहलता आत्महत्या करना चाहती हैं। आत्महत्या से पूर्व स्नेहलता अपने पिता को एक दर्द भरा पत्र लिखती हैं, उसकी प्रस्तुति कवि ने इस प्रकार की है-

पिता जी घर को मत ना छोड़ ।।टेक।।

स्नेहलता लिखने लगी ले कागज कलम दवात।।

मेरी विनती है परमात्मा, दोनों जोड़े हाथ।

मुझको फिर मत देना यह खोड़ ।। पिता-

सभी कुटुम्ब सुखसे बसो, भाई बहन-माँ बाप।

घर बिकाय का आपका ना सिर बांधु मैं पाप।।

मैं चली अनंत की होड़। पिता-

ओ हिन्दू जाति पापिनी, तू सब पापों की खान।

दुनिया से मिट जाएगी, तेरा घर होगा वीरान।।9

पं. बहोतराम:

पं. बहोतराम का जन्म गुड़गांव जिले के जूडोला नामक गाँव में हुआ। आर्य समाज के सम्पर्क में आने पर इन्होंने हिन्दी-संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। वेदों-पुराणों का इन्होंने अच्छा अध्ययन किया। वे सदैव अपने हाथ में लम्बी लाठी रखते थे। नित्य संध्या हवन करते थे और आर्य समाजियों को भी सिखाते थे। लोगों को यज्ञोपवीत धारण करने की शिक्षा देते थे। शरीर पर खद्दर की धोती, कुर्ता व अंगोछा धारण करते थे। हरियाणा में आर्य-समाज की स्थापना में इनकी बड़ी भूमिका रही है। उनके भजनों का एक नमूना द्रष्टव्य है-

हिन्दुओं के ढंग-कुढंग सुनो ।।टेक।।

पूजे शेर कच्छ मच्छ, कंकर-पत्थर और वृक्ष।।

रहा ना आगा, पाछा बच,

कृष्ण राधा के संग सुनो।

निकल घर में काला नाग, कहते धन्य हमारे भाग,

गूगापीर आया जाग, कहे महाराज छिपाले अंग सुनो।10

महाशय रामजी लाल:

महाशय रामजी लाल का जन्म सन् 1920 में रेवाड़ी जिले की नाहड़ तहसील के बव्वा नामक गाँव में हुआ। इनके पिताश्री सालिग राम कबीरपंथी थे। वे इकतारे पर गाया करते थे। रामजी लाल को संगीत कला उसके पिता से विरासत में मिली थी। एक बार गाँव लूखी में आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में इनके भजन को सुनकर लोग अभिभूत हो गये थे। वे स्वतंत्रता सेनानी भी थे। वे आजीवन पैंशन प्राप्त करते रहे। उनका स्वर्गवास दिसम्बर 1972 में हुआ। उनके भजनों का एक नमूना द्रष्टव्य है-

अनपढ़ पंडत बीमार वैद अर निर्धन नै धनवान कहैं।

www.ignited.in

जित न्याय करनिया पंच नहीं व नगरी बियावान कहै ।।टेक।।

मूर्ख पंडत, स्याणे, भोपे पाखण्ड ढोग भर काम करै,

आप मरीज औरों की दवाई बीमारों की हान करै,

धन के लोभी झूठ बोलते न सत्यासत्य का ध्यान करै,

निर्दयी प्राण हरै औरों के उन्हें वैद्य कहें या शैतान कहैं।।

खून चूस के मजदूरों का पाप का माल कमाया हो,

धन धरती नीचे गाड़ दिया न सुकृत में पैसा लाया हो,

चोरी ठग्गी मक्कारी से माल गरीबों का खाया हो,

हरिभजन का नाम नहीं, कुकर्म से मन बहलाया हो,

पाप का बदला जरूर मिलेगा न्यू नीति का प्रमाण कहैं।11

श्रीमती कस्तूरी बाई:

कस्तूरी बाई का जन्म रेवाड़ी जिले के बालधन कलां नामक गाँव में सन् 1899 में हुआ था। वह बहुत पढ़ी-लिखी नहीं थी, लेकिन समाज की समझ बहुत थी। इनका विवाह रोहतक जिले के बेरी नामक गाँव में अध्यापक राव रामपत के साथ हुआ। कस्तूरी बाई ने आर्य समाज के मंच से नारी सुधार, स्वदेशी व स्वाधीनता संग्राम का बिगुल बजाया। कस्तूरी बाई की कतिपय रचनाएँ उपलब्ध हैं। खादी प्रचार के लिए चर्खे का महत्त्व प्रतिपादित करती हुई वे कहती हैं-

चर्खा कुछ छोटा नहीं है, है तोप बड़ी बलवान।

धागे गोले सूत के, करे दुश्मन को बेजान।।

अंध-विश्वास और बुराइयों को त्यागकर वैदिक धर्म पर चलने का उपदेश देती हुई वे कहती हैं-

तज वेद धर्म की बाण, बहन क्यों धर्म घटाती हो ।।टेक।।

तुम पूजो सेढ़ मसानी, नहीं सोची लाभ और हानि,

कहो पति से खोटी बानी, करके धर्म की हानि।।

बहन क्यों लाज गँवाती हो.....।

करो भारत को कंगाल, हाथ खो दिया सब धन माल।

बहन क्यों लाज गँवाती हो.....।12

पं. सुखीराम:

पं. सुखीराम का जन्म महेन्द्रगढ़ जिला के स्याणा नामक गाँव में हुआ। निरक्षर होते हुए भी उन्हें काव्य रचना का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने भक्ति और सुधारमूलक गीतों की रचना की। बानगी के रूप में उनका एक गीत द्रष्टव्य है-

हंसा चलने को तैयार है, ना जाणु कब फेर मिलेंगे।।टेक।।

अन्न जल पानी अति बलवाना, जहाँ लिखा वहाँ होगा जाना,

बीच में लिख दिया भूल भुजाना, ये तिरगुण का बाजार है,

ना तौड़े फूल खिलेंगे,

साथी छोड़े अपनी संग के, महल अटारी छोड़े कई ढंग के,

तिरया रोवे पास पिलंग के, कहै मेरा भरतार है,

नयनों से नीर ढुलैंगे.....।13

स्वामी विद्यानंद:

स्वामी विद्यानंद का जन्म सन् 1908 में गाँव झांसवा कला (झज्जर) तुलसीराम के घर हुआ। इनकी माता का नाम सारली थी। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा गाँव में हुई। भिवानी और हरिद्वार स्थानों पर रहकर आपने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। कई वर्षों तक आपने लूखी, रेवाड़ी आदि स्थानों पर इन्होंने हिन्दी व संस्कृत का अध्यापन भी किया। विद्यानंद ने सन् 1939 के हैदराबाद के सत्याग्रह में भी भाग लिया। उनके गीत बड़े ओजस्वी होते थे जो मुर्दों में भी जान डाल सकते थे। बानगी के रूप में एक गीत द्रष्टव्य है-

भारत माता कह रही, कोई आजाद करावै तो,

पड़ी गैरों की गोद में, कोई माँ की बंध छुड़ावै तो,

सिंहनी एक सुत पैदा करके निर्भय बन में सोती थी।

लेकिन चालीस करोड़ की माता पड़ी कैद में रोती है।14

मोहर सिंह 'मस्त':

मोहरसिंह मस्त का जन्म सन् 1896 में महेन्द्रगढ़ जिले के कँवाली नामक गाँव में हुआ। इन्होंने दसवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। आर्य समाज के प्रभाव से ये राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े। सन. 1921-22 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के

www.ignited.in

दौरान वे जेल भी गये। इनके गुरु का नाम विजयानंद था। इनका देहांत सन् 1946 में हुआ। इनके गीतों की चार पुस्तकें प्राप्त हैं- (1) गाँधी का फौजी ऐलान, (2) क्रांति की गीतांजलि, (3) शहीदों का संदेश, (4) आज़ादी की देवी। बानगी के रूप में उनके भजनों का एक नमूना द्रष्टव्य है-

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखा देंगे।

आजाद ही हो लेंगे या सर को कटा देंगे।।

हटने के नहीं पीछे डर के कभी ज़ुल्मों से।

तुम हाथ उठावोगे, हम पैर बढ़ादेंगे।।

निःशस्त्र नहीं है हम बल हैं हमें चर्खे का।

चर्खे से ज़मीं का हम तो चर्खे गुंजा देंगे।15

रघुवीर दास शर्मा:

रघुवीर दास शर्मा का जन्म भिवानी जिले के प्रसिद्ध नगर 'दादरी' में 15 अगस्त, 1925 में हुआ। इनके पिता का नाम लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा माता का नाम छपनी देवी था। इनकी पत्नी का नाम चमेली देवी था, जिनके चार पुत्रों और एक पुत्री को जन्म दिया। कविवर शर्मा ने मिडिल कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् वे पुलिस में भर्ती हो गये, लेकिन वहाँ उनका मन नहीं लगा। फलतः उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी। उन्होंने दादरी के शंभुदास को अपना आदर्श और शिवलाल स्वामी को अपना गुरु माना है। 20 मार्च 2977 को आपका देहावसान हो गया।

उन्होंने अनेक रचनाएँ लिखीं जिनमें मुख्य हैं - कृष्णलीला, पार्वती मंगल, श्रीकृष्ण सुदामा, सावित्री सत्यवान, द्रौपदी चीरहरण, सत्यावादी हरिश्चन्द्र, दमयंती स्वयंवर, अमरसिंह राठौर, कथा कथा लज्जावजी, वीर हकीकतराय, भक्त पूर्णमल, हीर रांझा आदि। बानगी के रूप में एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

कृष्ण की महिमा निराली, माया अपरम्पार है।

कृष्ण निर्गुण सगुण, कृष्ण जग का साईं है।।

कृष्ण कहने से मिटै, आवागमन और सुख मिले।

कृष्ण ही इस भव सिन्धु के, इस जीव का आधार है।।

कृष्ण की ज्योति से चमके, चाँद सूरज तारागण।

कृष्ण तीनों लोक में नौ खंड का विस्तार है।।16

पंडित साधुराम:

पं. साधुराम का जन्म कुरुक्षेत्र अंचल के पबनावा नामक ग्राम में 13 दिसम्बर 1904 में हुआ। इनका ग्रहस्थ का नाम पं. साधुराम व संन्यास का नाम स्वामी नारायण गिरि था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम बारणा (कुरुक्षेत्र) में हुई। इन्होंने आचार्य की उपाधि 'रंगवाला एवं दुग्याना संस्कृत विद्यालय, अमृतसर (पंजाब) से प्राप्त की।' वे संस्कृत, उर्दू, पंजाबी व हिन्दी के ज्ञाता थे। उन्होंने अनेक ग्रंथो की रचना की, यथा-भजनोपदेश माला, ज्ञान प्रवोधिनी, कुरुक्षेत्र पथ प्रदर्शक, महाप्रयाण गीता, गुरु-शिष्य संवाद, राममिलन की राह, विचार तरंग भाग-1, विचार तरंग भाग-2, दशरथ रामायण, संकल्प शक्ति, जीव आत्मा और मन का संवाद, कर्मयोग, सत्संग महिमा आदि। उनके उपदेशों में वेद, उपनिषद, गीता, पुराण आदि का समावेश है। उनका एक भजन द्रष्टव्य है-

जर जोरू और चोर, चुगल का ना जिकर चलाणा चाहिए।

प्यारां के सत्संग बैठ, कुछ पे्रम मिलाणा चाहिए।

खावण-पेरण औढ़ण खातर इस दुनियां म्हं आया।

जिंद्गानी दिन चार सदा ना अमर रहेगी काया।।

हरिकेश पटवारी:

पं. हरिकेश पटवारी जीन्द जिले के धनेरी गाँव के निवासी थे। उनके भजनों के चार संग्रह हैं-वैराग्य रत्नमाला, प्रश्नोत्तरी, हरिकेश पुष्पांजलि, आजादी की झलक। उनका एक भजन द्रष्टव्य है-

भूखे मरते भक्त, ऐश करते ढंग, चोर, जुवारी क्यूँ।

फिर भगवान तनै न्यायकारी कहती दुनिया सारी क्यूँ।

नशे विषे में मस्त दुष्ट सुख की निद्रा में सोते देखे।

सतवादी सतपुरुष भूख मंे जिंदगानी खोते देखे।

एम.ए. बी.ए. पढ़े लिखे सिर ऊपर बोझा ढोते देखे।

महालंठ अनपढ़ गँवार कुर्सी नसीन होते देखे।

फूहड़ जन्मे बीस एक नै तरसे चातर नारी क्यूँ।।17

www.ignited.in

पं. श्रीराम शर्मा:

पं. श्रीराम शर्मा का जन्म सन् 1907 में रोहतक जिले के भैंसरू कला नामक गाँव में हुआ था। उनका देहांत 17 सितम्बर 1966 को हुआ। उनकी रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं-नरसी का भात, सावित्री सत्यवान, श्रीकृष्ण सुदामा, नल दमयंती, विक्रम भरथरी, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, सरवर-नीर, चन्द्रहास, अजीत सिंह राजबाला, चंचल कुमारी, जयमल फत्ता, रानी-झाँसी, लव-कुश आदि। कथा अजीत सिंह राजबाला से प्रेमिका की विरह-वेदनाका नमूना द्रष्टव्य है-

जोबन की जलै लाल झर लटा, राम कदें दैंगे दुःख नै मिटा।

चढ़ी घटा गगन घनघेरी, हो पिया जी, किसे मंगल गावैं नारी।

भाण्डे भ्रमां के फूटे सैं, रात-दिन मुश्किल तै टूटैं सै,

उठें झाल भतेरी, हो पिया जी, शर्मा जी ब्योंत बिन हारी।।18

भारतभूषण सांघीवाल:

भारतभूषण सांघीवाल का जन्म 28 फरवरी, 1932 में रोहतक जिले के सांघी नामक गाँव में हुआ। उनकी हरियाणवी रचनाएँ इस प्रकार हैं- नरसी भक्त, परशुराम चरित, सीता हरण, श्रीकृष्ण जन्मकथा, कीचक वध, धर्मवीर, हकीकत रास, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, वीरबाला चंचल कुमारी, फूलझड़ी उर्फ ब्रह्मदेई, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, हरियाणवी गीतांजलि, विजय अभियान, भारतभूषण का गुच्छा आदि। उनके भजन का एक नमूना द्रष्टव्य है-

नरसी मत घबराइए मैं भात भरूँगा तेरा।

गाम गाम अर नगर नगर में, जय गाया जा मेरा।

मोहर अशर्फी हीरे पन्ने, लाल जवाहर लाऊँ।

घन माया का ओड़ नहीं, मैं सारे कै बरसाऊँ।

सिरसा नगरी दंग रह ज्यागी, करतब इसे दिखाऊँ।

इसा भात ना भर्या आज तक, न्यूँ रुक्का गिरवाऊँ।

चन्द्रमा ज्युं खिल ज्यागा, फिर हरनंदी का चेहरा।।19

फौजी मेहरसिंह:

फौजी मेहरसिंह का जन्म सोनीपत जिले के बरोना गाँव में सन् 1918 में हुआ था। इनकी राग-रागनियों में सामाजिक जीवन के अनेक बिम्ब मिलते हैं। इनकी प्रमुख रचनाओं में सरवर-नीर, सत्यवान-सावित्री, अजीत सिंह राजबाला, शाही लक्कड़हारा, अंजना-पवन, सुभाषचन्द्र बोस आदि प्रसिद्ध हैं। इनकी भाषा में ठेठ हरियाणवी लहजा मिलता है। इनकी रागनियों में शृंगार व वीर रस की प्रधानता है। उनकी रागनी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

धन बिन दान, दान बिन दाता, दाता बिन जर सुन्ना है।

सत बिन मर्द, मर्द बिन तिरिया, तिरिया बिन घर सुन्ना है।

रण बिन सूरा, सूरे बिन तेगा, तेगे बिन कर सुन्ना है।

तप बिन कर्म, कर्म बिन किस्मत, किस्मत बिन नर सुन्ना है।

हठ बिन हार, हार बिन हाणी, हाणी बिन हुश्यार नहीं।।20

तारादत्त विलक्षण:

इनका जन्म अलेवा ग्राम में सन् 1917 में हुआ। इनके गीत आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारित हुए हैं। इन्होंने एकांकी, हरियाणवी गीत, हरियाणवी भाषा और व्याकरण जैसे ग्रंथ लिखे हैं। इनके गीत राष्ट्रीय चेतना व देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

सब तै ऊँचा सबतै सुंदर झंडा श्रेष्ठ म्हारा सै।

जणे जणे की आँख का उज्ज्वल भाग का तारा सै।

देश की गौरवगाथा सै यू हिन्द देश की शान तिरंगा।

सूत्र एकता का भारत की चक्करदार महान तिरंगा।

धर्म चक्र से अशोक सारे जग तै न्यारा सै।।21

रामेश्वर दयाल शास्त्री:

इनका जन्म 1919 में रेवाड़ी जिले के पाल्हावास ग्राम में हुआ। हरियाणवी रामकाव्य परम्परा में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। हरियाणवी रामायण, वीरांगना उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उनकी कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

जिब तै बोतल मुँह लागी होगया सै मोटा चाला।

www.ignited.in

हाण्डे बकता गाल्यां में सीख्या यो ढंग निराला।

ज्वानी आणे तै पहल्यम दे घेरा अण्य बुढ़ापा।

सब सग रंग भूल्या सै ओली ही राह पकड़ी।

बस याद तीन ही रहग्यी सै नूण, तेल और लकड़ी।

ढूंढे तै घर पावैगा जित दूध दही का खाणा।

कहणे मैं ही बस रहग्या देसां में देस हरियाणा।।22

जगदीशचन्द्र वत्स:

इनका जन्म सन् 1916 में करनाल जिले के कुराना गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम लखीराम था। वे वेदों, उपनिषदों के ज्ञाता थे। इन्होंने दोहे, लोक कथाएँ, मुक्तक, भजन आदि की रचना की है। इनकी कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

दुराचार व्याभिचार नशे में, सारे निंदा होज्या।

कामी पुरुष काम के बस हो, बिल्कुल अंधा होज्या।

तन मन धन रंग रूप रहे ना, चेहरा मंदा होज्या।

भोग से रोग, रोग से मृत्यु, गल में फंदा होज्या।

दाग लाग पर चंदा होज्या, चाहिए गात बचाणा।।23

मूलचंद वर्मा:

मूलचंद वर्मा का जन्म सन् 1916 में भिवानी नगर में हुआ। इन्हें उर्दू व हिन्दी का अच्छा ज्ञान था। वे संगीत के अच्छे ज्ञाता थे। 'मूल पद्य पुष्पांजलि', 'भजन चालीसा' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनका देहांत 12 अक्तूबर 2002 में हुआ। उनकी कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

हरियाणे की सबसे मीठी सुथरी साथरी भाषा भूषा।

रोता राता माणस मूणस, हाँसै हूँसै खासा खूसा।

हरियाणै का दुनियाभर में, बाजै बूजै तासा तूसा।

गाणै गुणै सी धुन टाबर टूबर के रोणे राणे की।।24

कंवल हरियाणवी:

इनका जन्म कैथल जिले के पाई गाँव में 9 मई, 1927 ई. में हुआ। 'तलास अपने साय की', 'तारे नवे नवे से', 'धड़कनें एहसास की', 'नैया और पतवार' आदि रचनाओं में इनकी कविताएँ संग्रहीत हैं। इनकी कविता एक नमूना द्रष्टव्य है-

चार दिन की जिंदगी में दुःख पावैगा,

मान जा मन बेईमान पछत्यावैगा।

जिस विध राखे राम, उसी विध रहणा ठीक सै।

मानवता के हित में दुखड़ा सहणा ठीक सै।

जो कुछ कहणा सोच समझ के कहणा ठीक सै।।25

इनके अतिरिक्त कतिपय अनेक भजनियों का नामोल्लेख करना उचित होगा। जैसे-रामप्रसाद, पेटवाड़ (हिसार), पं. चन्दूलाल, मिर्जापुर (हिसार), पं. रवि स्वरूप, निन्दाणा (रोहतक), पं. मुंशीराम बुआना, ज्ञानीराम, अलेवा, जगन्नाथ, समचाना (रोहतक), सूबेराम, आट्टा (पानीपत) आदि।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उक्त भजनोपदेशकों ने हरियाणवी जनमानस में नई चेतना व नया आलोक उद्बुद्ध किया। स्वतंत्रता आंदोलन में इन कवियों की विशेष भूमिका रही है। लोकगायकों ने गाँव-गाँव में अलख जगाकर लोगों के दिल और दिमाग में अंग्रेजी राज्य के प्रति नफरत पैदा की। इन लोकगायकों ने जन-जन को गुलामी के अभिशापों से परिचित कराकर परतंत्रता की बेड़ियों को काट फैंकने के लिए मजबूर किया। जनमानस में स्वदेशी भावना उत्पन्न करके राष्ट्रीयता की भावना पैदा की। इन लोकगीतकारों ने अंध-विश्वासों, सामाजिक कुरीतियों और भ्रांत धारणाओं को उखाड़ फेंककर जनमानस में नव चेतना का संचार किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, आचार्य पुष्पेन्द्र (2004), शक्ति तत्व: विविध आयाम, ईस्टर्नबुकलिंकर्स, दिल्ली

गुप्त, डॉ. नत्थूलाल (2002), भारत की धार्मिक परम्परा, राधापब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

जोशी, महावीर प्रसाद (1997), द्वितीय संस्करण, शक्ति शतक, श्रीमंगलम् साहित्य प्रकाशन प्रा.लि., जयपुर

www.ignited.in

जोशी, प्रो. हेमलता (1999), प्रथम संस्करण, रागऔर रस, निर्मलपब्लिकेषन्स, दिल्ली

जैन, डॉ. ज्योतिप्रसाद (2004), चतुर्थ संस्करण, भारतीय इतिहास की दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

जैन, विजयलक्ष्मी (2002), प्रथम संस्करण, संगीत दर्शन, राजस्थानीग्रन्थागार, जोधपुर

Corresponding Author

Dr. Upasana Jindal*

P.Hd. (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.